Vol. IX
Number-12

ISSN 2319-8265
(Special Issue) January, 2018

UGC Number-62976

EDUCATION TIMES

A Multidisciplinary International Peer Reviewed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

CamScanner

CONTENTS

Phytochemical Characteristics of the Essential Oils Extracted From Hydnocarpus Wightianus Seeds Collected From Various Sacred Groves of Kerala State 1
Sajith S.

Impact of Artificial Intelligence in Banking and Financial Service Sector 4
Dr. Sunil Gehlot

A Study on Customers Attitude Towards Online Shopping in India and its Impact 9
Dr. Rahul S. Kharabe

Women Empowerment 13
Dr. Meenu Vishnoi

Bit Coin: A Peer-to-Peer Electronic Cash System 17
Dr. Rahul S. Kharabe

Entrepreneurial Attitude Among Commerce and Management Graduate Students 24
Dr. Prajisha Kayalatt

Impact of Make in India Campaign on the Indian Economy 31
Dr. Rahul S. Kharabe

Larkin: A Movement Poet in English Poems 37
Dr. Anuradha Singh and Dr. Ashutosh

A Study of Trainee Students Response and Ideal Behaviour in the Classroom Environment 41
Md. Sadre Alam

Performance Assessment in Elite Football Players: Field Level Test Versus Spiroergometry 51
Dr. Zakir S. Khan

The Novels of Graham Greene: His Narrative Skill 57
Dr. Sangeeta Arora

A Study of Impact of Organizational Climate on Adjustment Level of College Teachers in Lucknow City 62
Dr. Brijesh Chandra Tripathi

Harmful Chemicals in Artificial Food Preservatives 70
Dr. Bineeta Yadav

CamScanner

Nawab Abdul Latif: A Traditionalist Modern Reformer of the Nineteenth Century 73
Md. Ginnatulla Sk.

Accreditation System in Diagnostic and Research Laboratories: Brief study 78
Dr. Navneet Kumar R. Singh

Indian Music as a Career Option-Newly Emerging Trends and Traditional Employability 80
Dr. Vandana Sharma

Indu's Search for Self-Identity in Roots and Shadows 86
Dr. Mahadeo Raghunath Jare

Beauty as the Guiding Principle in Rabindranath Tagore's Poetry 91
Dr. Madhu Jain

On a Structure Defined by a Tensor Field F(≠ 0) of Type (1,1) Satisfying aF2 + bF + cI = 0 95
Kaushal Kumar Bajpai

"Spaces" and "Shadows": Analysis of the Narrative Technique in Amitav Ghosh's Shadow Lines 106
Surbhi Khurana

Human Trafficking in Pre-Modern India: A Study of the Institution and the Modes of Slavery 109
Dr. Manu Jayas

Impact of Socio-Economic Status of Parents on Study Habit of Secondary School Students 114
Mr. Prasanna Kumar Gouda, Dr. Minati Rani Mohapatra and Dr. Dibakar Sarangi

Past, Present and Future of Multidimensional Education 118
Jayarama Reddy

The Indian Perspective of Trafficking of Human Organs 130
Dr. Puja Makhijani

'बुध्दाचा धम्म आणि दहशतवाद': एक अध्ययन 138
Dr. Narendra Vasant Raghatate

'अहिंसाके पुजारी' महात्मा गांधीः एक चिंतन 143
Dr. Narendra Vasant Raghatate

मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक चेतना 149
प्रा. डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे

CamScanner

मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक चेतना

प्रा. डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे*

समाज के तहों में छिपे सत्यों को अनावरित कर समाज को आइना दिखाती मुक्तिबोध की कहानियाँ निश्चित रूप से उन अनेक गाँठों को खोलने का कार्य करती है, जिन्हें देखने तक का साहस वर्तमान मानवीय समाज में नहीं है। मुक्तिबोध मानते हैं कि अपने ही स्वार्थों और मजबूरियों की परिधि से घिरा, आत्मा और बुद्धि के द्वंद्व को संभालता, यह मानव समाज स्वयं ही भीतर ही भीतर विक्षिप्त होने के लिए अभिशप्त हो जाता है। क्लॉड ईथरली कहानी में नायक से रास्ते में मिलनेवाला शख्स कहता है कि - **जो आदमी आत्मा की आवाज कभी-कभी सुन लिया करता है और उसे बयान करके उससे छुट्टी पा लेता है, वह लेखक हो जाता है। आत्मा की आवाज को लगातार सुनता है, और कहता कुछ नहीं, वह भोला-भाला सीधा-सादा बेवकूफ है। जो उसकी आवाज बहुत ज्यादा सुना करता है और वैसा करने लगता है, वह समाज-विरोधी तत्वों में यों ही शामिल हो जाया करता है। लेकिन जो आदमी आत्मा की आवाज जरूरत से ज्यादा सुन करके हमेशा बेचैन रहा करता है और उस बेचैनी में भीतर के हुक्म का पालन करता है, वह निहायत पागल है। पुराने जमाने में संत हो सकता था। आजकल उसे पागलखाने में डाल दिया जाता है।**[1]

जो व्यक्ति पागल नहीं होना चाहता हैं वह समझौतावादी बन जाता है, आज की भाषा में कहे तो वह सभ्य व्यक्ति हो जाता है। आज के मध्यम वर्गीयों की भी यह विडंबना है कि वे सर्वाधिक समझौतावादी बनते जा रहे हैं, यह भी एक तथ्य है। इसलिए **क्लॉड ईथरली** कहानी में नायक से रास्ते में मिलनेवाला शख्स कहता है कि - **हमारे अपने-अपने मन-हृदय-मस्तिष्क में ऐसा ही एक पागलखाना है, जहाँ हम उन उच्च पवित्र और विद्रोही विचारों और भावों को फेंक देते हैं, जिससे कि धीरे-धीरे या तो वह खुद बदल कर समझौतावादी पोशाक पहन सभ्य भद्र हो जाए यानी दुरुस्त हो जाए या उसी पागलखाने में पड़ा रहे!**[2]

मुक्तिबोध की कहानियों में समाज की गरीबी, अभाव तथा भूखमरी का चित्रण है, गरीबी तथा अभाव की मार सहता वह वर्ग है जिसकी हिम्मत पूरी तरह टूट चुकी है। भूख से व्याकुल, साधनहीन, वंचित, हारा हुआ यह वर्ग अपने तथा अपने परिवार के भरण-पोषण की जबावदारी भी नही उठा पाता है। बाजार वस्तुओं से अटा पडा है पर इस वर्ग की चिंता केवल और केवल अपने ऊदर-निर्वाह से बाहर नहीं निकल पाती है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण है, जिसमें दबा हुआ मध्यम वर्ग है, जो चुपचाप रहकर भ्रष्टाचार में अपनी मूक सहमति तथा अंधी भूमिका निभाता है। जीवन में कुछ कर दिखाने की होड़ में लगा यह वर्ग चाहकर भी आवाज नहीं उठाता है। इस वर्ग में मानव चेतना का अंश होते हुए भी, कुछ भी कर पाने की स्थिति में यह वर्ग नहीं है। अपने नियोक्ताओं के लिए कार्य करनेवाला यह तबका केवल समाज के सर्वहारा के प्रति मात्र सहानुभूति का दिखावा करता है। स्त्री मुक्ति का प्रश्न कहानियों में उठाया गया है। स्त्री और पुरुष की बराबर की भूमिका में आ जाने के बावजूद भी, स्त्री की ओर, समाज के देखने का नजरिया बदलता नहीं है। आज भी समाज स्त्री के संदर्भ में पवित्र-अपवित्र की परिभाषाओं को

*अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आर्वी, जि. वर्धा।

CamScanner

अगली को पीढ़ी को समझाने में नाकाम है। उसी तरह मुक्तिबोध की कहानियों में अंधविश्वास का चित्रण है तथा उस पर प्रहार भी है। समाज की तह में छिपे यथार्थ को अनावरित करने में लेखक स्वयं को साक्षी बनाते नजर आते है। उनकी कहानियों के नायक अकसर मैं के रूप में विद्यमान है। लेखक स्वयं के अनुभव, अनुभूति तथा संवेदना से प्राप्त सत्य को विशिष्ट प्रतीकों के माध्यम से कहानियों में रखते हैं। यही समाज को समझने और समझाने का जरिया मुक्तिबोध की कहानियों की अनन्य विशेषता हैं। इसी सामाजिक चेतना का दर्शन मुक्तिबोध की कहानियों में होता है।

वर्तमान में विश्व सर्वाधिक, धार्मिकता के आवरण में चलते मतभेदों और उनसे जुड़े मत-मतांतरों तथा उनके माध्यम से फैलते, कट्टरतावाद तथा खून-खराबे से परेशान है। उसी प्रकार से आज भारत में जाति-संप्रदाय के आधार पर हो रहे भेदाभेद के चलते समाज में आपसी दूरियों से अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही है। आज मानव हर समय भय और संदेह के घेरे में हैं। छोटी-छोटी बातों पर लोग एक दूसरे के खिलाफ लाठियाँ लेकर भिड़ जाते हैं। **अंधेरे में** कहानी का नायक भी दुनिया के लोगों को एक माइक्रोस्कोप लेकर देखनेवाला चिकित्सक ही तो है। वह स्वयं के विषय में सोचता है कि वह - **चिकित्सक एक ऐसा सीधा-सादा हकीम था, जो दुनिया की पेटेंट दवाइयों के चक्कर में न पड़ कर अपने मरीजों से रोज सुबह उठने, व्यायाम करने, दिमाग को ठंडा रखने और उसको दो पैसे की दो पुड़िया शहद के साथ चाट लेने की सलाह देता था। सहानुभूति की एक किरण, एक सहज स्वास्थ्यपूर्ण निर्विकार मुसकान का चिकित्सा-संबंधी महत्व सहानुभूति के लिए प्यासी, लँगड़ी दुनिया के लिए कितना हो सकता है - यह वह जानता था! इसलिए वह मतभेद और परस्पर पैदा होने वाली विशिष्ट विसंवादी कटुताओं को बचा कर निकल जाता था। वह उन्हें जानता था और उसकी उसे जरूरत नहीं थी! दुनिया की कोई ऐसी कलुषता नहीं थी जिस पर उलटी हो जाय - सिवा विस्तृत सामाजिक शोषणों और उनके उत्पन्न दंभों और आदर्शवाद के नाम पर किए गए अंध अत्याचारों, यांत्रिक नैतिकताओं और आध्यात्मिक अहंताओं की तानाशाहियों को छोड़ कर!** [2]

ऐसी अनेक समस्याओँ में मानव समाज में गरीबी, भूख और अत्याचार की व्यापकता का अंदाज लगाना भी मुश्किल कार्य नहीं है क्योंकि विश्व इतिहास में प्रागैतिहासिक काल से उसका वर्णन मिलता है। सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ मानव ने मानव पर विजय पाने के लिए गरीबी, भूख और अत्याचार को साधन के रूप में इस्तेमाल किया है। अंग्रेजी में Survival of Fittest का सिद्धांत भी इसी प्रकार से निर्मित है। भूख मनुष्य जीवन में व्यवस्था की नाकामी का उदाहरण है तो भूखों के संदर्भ में समाज का ध्यान न देना संवेदनाहीनता का। व्यक्ति जब उन्हें देखकर भीतर से कहीं काँप जाता है तो आत्मा और बुद्धि के द्वंद्व का पता चलता है। यही द्वंद्व तो व्यक्ति सोचने के लिए मजबूर करता है, उसके विवेक को चुनौती देता है, उसे कवि-लेखक बनाता है। तब मनुष्य सोचता है कि क्यों लोग यो सहन करते जाते हैं। क्यों? अँधेरे में कहानी के नायक को ऐसा ही कुछ अनुभव होता है कि - **युवक के पैरों में कुछ तो भी नरम-नरम लगा - अजीब, सामान्यतः अप्राप्य, मनुष्य के उष्ण शरीर-सा कोमल! उसने दो-तीन कदम और आगे रखे। और उसका संदेह निश्चत में परिवर्तित हो गया। उसका शरीर काँप गया। उसकी बुद्धि, उसका विवेक काँप गया। वह यदि कदम नहीं रखता हैं तो एक ही शरीर पर - न जाने वह बच्चे का है या स्त्री का, बूढ़े का या जवान का - उसका सारा वजन एक ही पर जा गिरे। वह क्या करे? वह भागने लगा एक किनारे की ओर। परंतु कहाँ-वहाँ तक आदमी सोए हुए थे उसके शरीर की गरम कोमलता उसके पैरों से चिपक गई थी। वहीं एक पत्थर मिला; वह उस पर खड़ा हो गया, हाँफता हुआ। उसके पैर काँप रहे थे। वह आँखे फाड़-फाड़ कर देख रहा था।**

CamScanner

रंतु अँधेरे के उस समुद्र में उसे कुछ नहीं दीखा। यह उसके लिए और भी बुरा हुआ। उसका पाप यों ही अँधेरे में छिपा ह जाएगा! उसकी विवेक-भावना सिटपिटा कर रह गई; उसको ऐसा धक्का लगा कि वह सँभलने भी नहीं पाया। ह पुण्यात्मा विवेक शक्ति केवल काँप रही थी!

युवक के मन में एक प्रश्न, बिजली के नृत्य की भाँति मुड़ कर मटक-मटक कर, घूमने लगा - क्यों नहीं तने सब भूखे भिखारी जग कर, जाग्रत हो कर, उसको डंडे मार कर चूर कर देते हैं - क्यों उसे अब तक जिंदा हने दिया गया?[3]

मानवीय जीवन का एक अतिमहत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि अनेकानेक लोग अपने जीवन में कुछ न कर पाने की भावना से ग्रसित है। क्योंकि उनके पास न कोई काम है न ही पैसा। गाँवों में तो अति विकट स्थिति है, करने के लिए कोई काम भी नहीं है। जैसे तैसे अपने गुजारे लायक कमाना और कमाई न मिलने पर अपना गुस्सा वे नादान बालकों पर उतारते है या क्षुब्द हो जाते हैं, लगातार इस प्रकार से जीवन जीते हुए वे पत्थर या काठ की भाँति कठोर हो जाते हैं। **काठ का सपना** कहानी में बालिका सरोज के पिता की स्थिति भी कुछ ऐसी है कि - **उसके पिता अपनी बालिकाओं को देख प्रसन्न नहीं होते हैं। विक्षुब्ध हो जाता है उनका मन। नन्हीं बालिका सरोज का पीला उतरा चेहरा, तन में फटा हुआ सिर्फ एक 'फ्राक' और उसके दुबले हाथ उन्हें बालिका के प्रति अपने कर्तव्य की याद दिलाते हैं; ऐसे कर्तव्य की जिसे वे पूरा नहीं कर सके, कर भी नहीं सकेगें, नहीं कर सकते थे। अपनी अक्षमता के बोध से ये चिढ़ जाते हैं।**[4] ऐसे लोग जीवन में कुछ करना चाहते हैं। करने की इच्छा रखते हैं, रोज संकल्प करते हैं कि अब में निश्चित रूप से कुछ करुंगा लेकिन **कर्तव्य कर्म को पूरा करना केवल उसके संकल्प-द्वारा ही नहीं हो सकता। उसके लिए और भी कुछ चाहिए!**[5]

विश्व के मानव समाज में, विशेषकर भारत में भ्रष्टाचार की समस्या भी बहुत बड़ी है। हम जितना इस पर रोक लगाने की कोशिश करते हैं, यह महामारी फैलती ही जाती है। प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार की जड़े इतनी गहरा गई है कि उसका क्या कहा जाएं। सरकारी काम कोई भी हो प्रत्येक स्थान पर भ्रष्टाचार मौजूद है। विशेषकर सरकारी अनुदान के मामले में तो क्लर्कों की मुठ्ठियाँ गर्म किए बिना कोई काम हो जाए संभव नही लगता है। पहले की भाँति सीधे रिश्वत नहीं मांगी जाती बल्कि फाईलों को बार-बार दुरूस्ती के लिए भेजकर अथवा काम के बोझ का बहाना बना कर समय जाया किया जाता है, लेकिन नहीं जो लोग इसे जानते है वे स्वयं कार्यलयों में पहुँच कर रिश्वत दे कर अपने काम करा ले जाते हैं। इसी भ्रष्टाचार के बारे में **पक्षी और दीमक** कहानी का नायक उन घटनाओं को याद करता है जिसे अनेक बार उसने प्रत्यक्ष देखा है, और सोचता है कि संस्था संचालक परेशान है - **इसलिए कि माली साल की आखिरी तारीख को अब सिर्फ दो या तीन दिन बचे हैं। सरकारी 'ग्रांट' अभी मंजूर नहीं हो पा रही है, कागजात अभी वित्त-विभाग में ही अटके पड़े हैं। आफिसों के बाहर, गलियारे के दूर किसी कोने में, पेशाबघर के पास, या होटलों के कोनों में क्लर्कों की मुट्ठियाँ गरम की जा रहीं हैं, ताकि 'ग्रांट' मंजूर हो और जल्दी मिल जाए।**[6]

फिर यही भ्रष्टाचार दूसरे संस्थानों तक पहुँचता है। शैक्षिक संस्थानों का भ्रष्टाचार तो जगजाहिर है। सरकारी अनुदान से प्राप्त राशि को निजी कार्यों में लगा देना। झूठे बिल लगाना, ऑडिट के समय दिखावे के लिए वस्तुएँ लाकर और फोटो लगाकार झूठे रिकार्ड पर हस्ताक्षर करना। **पक्षी और दीमक** कहानी में उस भ्रष्टाचार के बारे में कल्पना में सोचता हुआ नायक कहता है कि **वह कहता जा रहा है, 'सूक्ष्मदर्शी यंत्र? सूक्ष्मदर्शी यंत्र कहाँ हैं?'**

CamScanner

'हैं तो। ये हैं। देखिए।' क्लर्क कहता है। रजिस्टर बताता है। सब कहते हैं-हैं, हैं। ये हैं। लेकिन, कहाँ हैं? यह तो सब लिखित रूप में हैं, वस्तु-रूप में कहाँ हैं।

वे खरीदे ही नहीं गए! झूठी रसीद लिखने का कमीशन विक्रेता को, शेष रकम जेब में। सरकार से पूरी रकम वसूल!

किसी खास जाँच के एन मौके पर किसी दूसरे शहर की...संस्था से उधार ले कर, सूक्ष्मदर्शी यंत्र हाजिर! सब चीजें मौजूद हैं। आइए, देख जाइए। जी हाँ, ये तो हैं सामने। लेकिन जांच खत्म होने पर सब गायब, सब अंतर्धान। कैसा जादू है। खर्चे का आँकडा खूब फुला कर रखिए। सरकार के पास कागजात भेज दीजिए। खास मौकों पर ऑफिसों के धुँधले गलियारों और होटलों के कोनों में मुट्ठियाँ गरम कीजिए। सरकारी 'ग्रांट' मंजूर! और उसका न जाने कितना हिस्सा, बड़े ही तरीके से, संचालकों की जेब में! जी!'[7] निश्चित रूप से वर्तमान समय मे भी अनेक प्रकार से प्रयत्न करने के बाद भी यह बतलाना निश्चित रूप से कठिन कार्य है कि सरकारें इस भ्रष्टाचार को रोक पाने में पूर्णतः सफल नहीं हो पा रही है अथवा प्रयत्न ही पूर्ण नहीं हैं क्योंकि सरकार में बैठे अनेक नेताओं की आवक का मार्ग भी यहीं से खुलता है।

भारत को स्वतंत्र हुए लगभग पैसठ वर्षों से अधिक समय हो गया है और लगभग उतना ही भारत के संविधान को लागू करने में हो गया है। संविधान ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारत नागरिक को प्रदान की है। किंतु ये भी जाननेयोगय है कि मध्यमवर्गीयों की स्वतंत्रता उन पैसेवालो के हाथ में होती है जो उन्हें नौकरी देते है। कहने को भले हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई है किंतु इस स्वतंत्रता का कितना उपयोग किया जा सकता है। उस पर् एक बहुत ही बड़ा प्रश्नचिन्ह लगा है, इसलिए **विपात्र** कहानी का पात्र भचावत कहता है कि - **'तो तुम क्या यह सोचते हो कि अपने मन की बातें साफ-साफ कहने से आपकी नौकरी टिक जाएगी? अजी, दो दिन में लात मार कर निकाल दिए जाएँगे। जनाब यह मेरी चौदहवीं नौकरी है। ज्यादा खतरा अब मैं नहीं उठा सकता। सच कहता हूँ इसलिए बदमाश कहा जाता हूँ, क्योंकि मैं अब तक व्यक्ति, स्थिति और परिस्थिति को न देख कर बात करता था। मैं बदमाश था। अब मैं सोच-समझ कर, अपने को भीतर छुपा कर, मौका देख करके बात करता हूँ, इसलिए लोग मुझे अच्छा समझते हैं। सवाल लिखित कानून का नहीं है। लिखित नियम तो यह है कि व्यक्ति स्वतंत्र है। किंतु वास्तविकता यह है कि व्यक्ति को खरीदने और बेचने की, खरीदे जाने और बेचे जाने की, दूसरों की स्वतंत्रता को खरीदने की या अपनी स्वतंत्रता को बेचने की आजादी है। लिखित नियम और चीज है, वास्तविकता दूसरी बात है। खाने के दाँत एक होते हैं, दिखाने के दाँत दूसरे। पूरे यथार्थ को मिला कर देखिए। मैं तो मारवाड़ी का बच्चा हूँ। आप कवि लोग हैं। सच्ची आजादी उन्हें है, जिनके पास पैसा है। वे पैसों के बल पर दूसरों की स्वतंत्रता खरीद सकते हैं... मैं खुद खरीदता था।'**[8] इस प्रकार सामाजिक अंतश्चेतना से सरोबार हो कर मुक्तिबोध ने अनेक समस्याओं को अपनी कहानियों में उकेरा है। मानव जीवन में समाज के साथ जीवन साझा रूप में जीते व्यक्ति को अनेकानेक कठिनाईयों और परेशानियों का सामना करना है। किंतु समाज और मनुष्य दोनों ही अपने-अपने स्तर पर एक-दूसरे के अस्तित्व को मान्यता प्रदान करते हुए विश्वास शून्य न हो इसका प्रयत्न मुक्तिबोध की प्रत्येक कहानी में स्पष्ट दिखाई देता है। इस विषय में श्री वेदप्रकाश दुबे का मत अवलोकनीय है। वे लिखते हें कि **मुक्तिबोध की कहानियाँ उस निशक्त और निरूपाय हिंदुस्तान की जीती-जागती तस्वीरें हैं जहां शोषण के चक्रव्यूह में घिरा आधुनिक अभिमन्यु है जिसका लड़ना और मारा जाना दोनों ही अवश्य संभावीय है। फिर भी मुक्तिबोध की कहानियों का अभिमन्यु नायक बड़े विश्वास के साथ लड़ता है यह जानते हुए भी कि उसे हारना है लड़ता इसलिए है कि लडाई जारी रहे, संघर्ष का संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित हो।**[9]

CamScanner

इस प्रकार से यह कहना समिचीन ही होगा कि मुक्तिबोध की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती है। साथ ही यह अपेक्षा भी रखती है कि सामाजिक दुश्चिंताओं और परेशानियों का निवारण हो सके है समाज में छुपी बुराईयों पर समाज मन चिंतन करे तथा उन बुराईयों को दूर करने हेतु गतिशील होकर प्रयत्नरत रहे। इसी प्रकार से मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक चेतना का दर्शन होता है।

संदर्भ

1. क्लॉड ईथरली, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
2. क्लॉड ईथरली, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
3. अँधेरे में, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
4. काठ का सपना, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
5. काठ का सपना, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
6. पक्षी और दीमक, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
7. पक्षी और दीमक, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
8. विपात्र, कहानी, वेबसाईट-हिन्दी समय, म.गा.अं.हि.वि.वर्धा
9. मुक्तिबोध का साहित्य चिंतन और उनकी रचनाशीलता का मूल्यांकन — पीएच्.डी. शोध ग्रंथ, डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर 1998

CamScanner